प्रथम वार्षिकोत्सव में नेत्र और देहदानियों के परिवारों का सम्मान

DADHICHI DEH DAN SAMITI DEHRADUN (UTTARAKHAND)

दधीचि देहदान समिति देहरादून (उत्तराखण्ड)

श्री राधा कृष्ण मन्दिर परिसर, यमुना कालोनी, देहरादून (उत्तराखण्ड)

फोन – 9412438100, 9897287021, 7906600421, 9411170800

angdandds@gmail.com www.angdan.org

Dadhichi Deh Dan Samiti Dehradun UK

Bank - Indian Bank, ISBT, Dehradun
A/c No. 7197615066
IFSC - IDIB000D557

आर्थिक सहयोग की जानकारी कृपया कोषाध्यक्ष जी को अवश्य दें।

अध्यक्ष	महासचिव
डा. मुकेश गोयल	नीरज पाण्डे एडवोकेट
9412438100	9897287021

उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
प्रो. अतुल कुमार गुप्ता	सुमित अदलखा	कृष्ण कुमार अरोड़ा
9837894998	7252888888	7906600421

दधीचि देह दान समिति
देहरादून (उत्तराखण्ड)

राजभवन में समिति के सदस्यों का सम्मान (17.09.2023)

मानवता के लिए नेत्रदान, अंगदान, देहदान

दधीचि देह दान समिति का गठन मानव कल्याण हेतु देहदान–अंगदान–नेत्रदान को समाज में स्वीकार्यता दिलाने का एक सकारात्मक प्रयास है। समिति 1997 से एक रजिस्टर्ड संस्था के रूप में दिल्ली व एन.सी.आर. में काम कर रही है। इसके संस्थापक एवं संरक्षक, सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील श्री आलोक कुमार जी की उपस्थिति में 27 फरवरी 2022 को देहरादून में इसका गठन किया गया है। समिति दानकर्ता के परिवार और सरकारी अस्पतालों एवं मेडिकल कालेजों के बीच सेतु का कार्य करती है।

देहदान

मृत्यु के पश्चात शरीर को मेडिकल कॉलेज को देना ही देहदान है। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों को सीखने के लिए एक मृत शरीर (कैडेवर) की आवश्यकता होती है। बिना कैडेवर के मेडिकल की पढ़ाई पूरी नहीं हो सकती। मृत शरीर मेडिकल छात्रों का प्रथम गुरु है। 4 छात्रों के अध्ययन की आवश्यकता एक कैडेवर पूरी कर सकता है, लेकिन इनके अभाव में मैडिकल कालेजों में 30–35 छात्र एक ही कैडेवर पर अध्ययन करने को मजबूर हैं। इसका प्रतिकूल प्रभाव उन छात्रों की योग्यता पर पड़ता है।

इसके अतिरिक्त सर्जन अनुसंधान व नई तकनीक के विकास के लिए भी कैडेवर पर निरंतर प्रयोग करते रहते हैं। इस तरह देहदान न केवल मेडिकल छात्रों की पढ़ाई के लिए वरन मुश्किल ऑपरेशन के अभ्यास एवं नई तकनीक की खोज के लिए भी आवश्यक हो जाता है।

कुछ बच्चे अनेक शारीरिक/ मानसिक विकृतियों के साथ पैदा होते हैं। उनकी जीवन यात्रा भी छोटी ही होती है। उनकी देह भी शोध में बहुत काम आती है।

(विशेष – मेडिकल कॉलेज में कुष्ठ/कोरोना पीड़ित तथा पुलिस केस वाली देह स्वीकार नहीं की जाती)

आप मानव कल्याण के लिए देहदान का संकल्प करके अपना जीवन सार्थक कर सकते हैं।

नेत्रदान

भारत में लाखों लोग आँखों के अभाव में अंधकारमय जीवन जी रहे हैं। इनमें से ज्यादातर बच्चे और युवा हैं। नेत्रदान उनको हमारे इस सुन्दर संसार में वापस ला सकता है। यह बहुत आसान भी है। जिनके नेत्रों का ऑपरेशन हो चुका है उनके नेत्र भी काम आते हैं। आइए किसी के अंधेरे जीवन में रोशनी लाने के लिए नेत्रदान का संकल्प लें।

नेत्रदान की प्रक्रिया बहुत आसान है। किसी भी प्रकार की मृत्यु के बाद यह किया जा सकता है। यह दान घर पर ही होता है और मात्र 10–15 मिनट में पूरा हो जाता है। मृतक के चेहरे पर किसी भी प्रकार की कोई विकृति नहीं आती। किसी भी आयु, लिंग, रक्त समूह और धर्म का व्यक्ति नेत्रदान कर सकता है।

अंगदान

कभी–कभी सिर में भीषण चोट से व्यक्ति का मस्तिष्क निष्क्रिय (ब्रेन डेड) हो जाता है। वरिष्ठ डॉक्टर जब गहन जाँच के बाद यह घोषणा करते हैं कि मरीज का ठीक होना संभव नहीं है, तब परिजन उसके स्वस्थ अंगों का दान कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति की आँख, लीवर, फेफड़े, हृदय, अस्थियाँ, त्वचा, बाल आदि किसी रोगी के काम आ जाते हैं। यही अंगदान है। इन अंगों का प्रत्यारोपण कई जगह होता है।

डाक्टरों द्वारा ब्रेन डैड घोषित होने पर समिति को सूचना दें। अगली कार्यवाही तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार की जाएगी।

देहदान, अंगदान, नेत्रदान को धार्मिक स्वीकार्यता

नर सेवा ही नारायण सेवा है। सभी धर्मगुरुओं ने नेत्रदान–देहदान को अपनी स्वीकार्यता दी है और कहा है कि ये जीवन का सर्वोच्च दान है। इससे हमारा शरीर मृत्यु के बाद भी मानव सेवा के काम आता है।

संकल्प कैसे करें

देहदान, अंगदान या नेत्रदान के लिए संकल्प पत्र दधीचि देहदान समिति के कार्यकर्ताओं के पास उपलब्ध हैं। संकल्प पत्र में दानदाता के परिवार के निकट सम्बंधी सहित दो गवाह आवश्यक हैं।

आप भी अमर हो सकते हैं

जी हाँ, यह सम्भव है। मृत्यु के पश्चात् भी आप जिएंगे किसी दृष्टिहीन की आँखों में रोशनी बनकर। त्वचा का रक्षा कवच बनकर। रगों में खून बनकर। दिल, किडनी, लीवर, अस्थि, फेफड़ों में जिन्दगी बनकर या चिकित्सा विज्ञान में ज्ञान का स्रोत बनकर।

इस बारे में जानें, समझे और समझाएँ।

किसी जरूरतमंद के जीवन का आधार बनें। आत्मदान करें।

यही हमारे मानव जीवन की सार्थकता है, यही सच्चा धर्म है।

पिछले दो वर्षों में

देहदान 9 नेत्रदान 12 संकल्पित दानी 274

आपकी सहभागिता हो सकती है।

1. स्वयं देहदान–नेत्रदान का संकल्प करके
2. समिति के कार्यों में अपना योगदान देकर
3. समिति को आर्थिक सहायता प्रदान कर